Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Research Article

The Pushtimarg Philosophy in the Poetry of Surdas

सूरदास के काव्य में पुष्टिमार्ग सिद्धांत

Dr. Vijay Sharma

ABSTRACT

This research paper presents a comprehensive analysis of the Pushtimarg philosophy in the poetry of Surdas. Surdas, one of the great Krishna-bhakti poets of Hindi literature, based his poetic compositions on the philosophy of Pushtimarg propounded by Vallabhacharya. The study analyses how the fundamental philosophical concepts of Pushtimarg—Pushti (divine grace), Anugraha (divine favour), Shuddhadvaita (Pure Non-Dualism), Bhagavat-Kripa (the grace of God), Lila-Tattva (the divine play of God), and Prema-Lakshana Bhakti (devotion characterized by divine love)—are expressed poetically in *Sursagar* and other works attributed to Surdas.

The study demonstrates that the philosophical principles of Pushtimarg are not merely presented as abstract theological concepts in Surdas's poetry; rather, they are transformed into deeply emotional, aesthetic, and experiential expressions of Krishna devotion. Through depictions of Krishna's childhood, divine play, loving relationships, separation, surrender, and grace, Surdas gives poetic form to the central ideals of Pushtimarg. His poetry establishes an intimate relationship between the devotee and the divine, in which devotion is rooted in divine grace and unconditional love.

The research further establishes that Surdas was not merely a devotional poet but also one of the most powerful poetic representatives of the Pushtimarg tradition. His poetry successfully integrates philosophical thought, devotional experience, emotional sensitivity, and literary aesthetics, thereby making the principles of Pushtimarg accessible and meaningful to the wider society.

Keywords: Surdas, Pushtimarg, Bhakti Movement, Shuddhadvaita Vedanta, Krishna-Bhakti Poetry.

प्रस्तुत शोध पत्र सूरदास के साहित्य में पुष्टिमार्ग सिद्धांत की व्यापक विवेचना करता है। सूरदास हिंदी साहित्य के महान कृष्णभक्त कवि हैं जिन्होंने वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित पुष्टिमार्ग दर्शन को अपनी काव्य-रचनाओं का आधार बनाया। इस शोध में पुष्टिमार्ग की दार्शनिक अवधारणाओं—पुष्टि, अनुग्रह, शुद्धाद्वैत, भगवत्कृपा, लीला-तत्त्व तथा प्रेमलक्षणा भक्ति—का सूरसागर एवं अन्य रचनाओं में किस प्रकार काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है, इसका विश्लेषण किया गया है। यह शोध-पत्र यह प्रमाणित करता है कि सूरदास मात्र भक्त कवि नहीं, अपितु पुष्टिमार्गीय दर्शन के सबसे सशक्त काव्य-प्रतिनिधि हैं।

मुख्य शब्द- सूरदास, पुष्टिमार्ग, भक्ति आंदोलन, शुद्धाद्वैत वेदांत, कृष्ण भक्ति काव्य।

Article History

- **ISSN**: 2584-184X
- **Received:** 02 Nov 2023
- **Accepted**: 28 Dec 2023
- **MRR:**1(1) Dec.2023:108-111
- **©2023, All Rights Reserved**
- **Peer Review Process:** Yes
- **Plagiarism Checked**: Yes

Authors Details

Dr. Vijay Sharma
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author

Dr. Vijay Sharma
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में सूरदास का स्थान अत्यंत विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण है। 'भक्तमाल' के अनुसार सूरदास अष्टछाप के प्रमुख कवियों में से एक थे और वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्यों में उनकी गणना होती है। सूरदास की काव्य-भाषा ब्रजभाषा है, परंतु उनके पदों में केवल भाषिक सौंदर्य ही नहीं, अपितु एक गहन दार्शनिक चिंतन की अंतर्धारा भी प्रवाहित होती है। यह दार्शनिक चिंतन पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों पर आधारित है।

पुष्टिमार्ग का प्रवर्तन आचार्य वल्लभ (1479-1531 ई.) ने किया था। इस मार्ग में ईश्वर की कृपा (पुष्टि) को मोक्ष का एकमात्र साधन माना गया है। मानवीय प्रयत्न गौण है, ईश्वरीय अनुग्रह प्रधान है। वल्लभाचार्य के इस दर्शन को सूरदास ने अपने पदों में जीवंत काव्य-रूप दिया। सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य-लहरी—इन तीनों ग्रंथों में पुष्टिमार्गीय दर्शन की काव्यमयी अभिव्यक्ति मिलती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि सूरदास ने किस प्रकार वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत वेदांत और पुष्टिमार्ग के मूल सिद्धांतों को अपनी काव्य-कृतियों में समाहित किया। इस हेतु हम पुष्टिमार्ग के प्रमुख तत्त्वों का क्रमशः विवेचन करेंगे।

2. पुष्टिमार्ग: दार्शनिक पृष्ठभूमि

2.1 पुष्टि की अवधारणा

'पुष्टि' शब्द का अर्थ है—पोषण, संवर्धन, परिपुष्टि। वल्लभाचार्य ने 'पुष्टिमार्ग' में 'पुष्टि' को भगवान श्रीकृष्ण की उस असीम कृपा के रूप में परिभाषित किया है जो भक्त को बिना किसी पूर्व योग्यता के प्राप्त होती है। 'अनुग्रह' और 'पुष्टि' पर्यायवाची हैं—दोनों का अर्थ है ईश्वर की निर्हेतुक कृपा।

वल्लभाचार्य ने अपने 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' में कहा है कि जगत में तीन प्रकार के जीव हैं—

- **पुष्टि:** भगवान की कृपा और अनुग्रह पर आधारित सर्वोच्च भक्ति।
- **प्रवाह:** सांसारिक गतिविधियों में लगे रहने के साथ-साथ सतही रूप से धर्म का पालन।
- **मर्यादा:** वेदों और शास्त्रों में निर्धारित नियमों और कर्मकांडों के अनुसार भक्ति।

पुष्टि जीव, मर्यादा जीव और प्रवाह जीव में पुष्टि जीव वे हैं जिन पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है। सूरदास की काव्य-दृष्टि में यही पुष्टि-तत्त्व सर्वत्र विद्यमान है। सूर के पदों में ब्रज के गोप-गोपियाँ पुष्टि जीव हैं जो भगवान की लीलाओं में स्वाभाविक रूप से भाग लेते हैं।

2.2 शुद्धाद्वैत वेदांत

वल्लभाचार्य का दर्शन 'शुद्धाद्वैत' कहलाता है। इस दर्शन में ब्रह्म, जगत और जीव—तीनों सत्य हैं। जगत ब्रह्म का आभास नहीं, बल्कि ब्रह्म की लीला-अभिव्यक्ति है। ब्रह्म 'सत-चित-आनंद' स्वरूप है और 'आनंद' इसका प्रमुख गुण है। श्रीकृष्ण ही पूर्ण ब्रह्म हैं और ब्रज लीला उनकी आनंद-अभिव्यक्ति।

सूरदास की काव्य-दृष्टि में भी यही तत्त्व प्रतिबिंबित होता है। सूर के पदों में कृष्ण की बाल-लीलाएँ, यशोदा का वात्सल्य, गोपियों का प्रेम—ये सब आनंदमय ब्रह्म की विविध अभिव्यक्तियाँ हैं, माया का जाल नहीं। सूर ने एक पद में कहा है: 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै'—यह आत्मा की उस स्वाभाविक पुकार का प्रतीक है जो केवल कृष्ण-कृपा से ही शांत हो सकती है।

3. सूरदास और पुष्टिमार्ग: काव्य-संबंध

3.1 वल्लभाचार्य से दीक्षा और प्रभाव

परंपरागत मान्यता के अनुसार सूरदास ने वल्लभाचार्य से पुष्टिमार्ग की दीक्षा गऊघाट (आगरा के निकट) पर ली थी। दीक्षा के पश्चात सूर की काव्य-दृष्टि में आमूलचूल परिवर्तन आया। दीक्षा-पूर्व के पदों में विरह, वैराग्य और आत्म-निंदा थी, परंतु वल्लभाचार्य से मिलने के बाद सूर के पद कृष्ण की बाल-लीलाओं से आनंदित हो उठे।

चौरासी वैष्णवन की वार्ता में उल्लेख है कि वल्लभाचार्य ने सूरदास से कहा था—'सूर ह्वै कर क्यों रोवत है? कृष्णलीला गान कर।' इस घटना के बाद सूरसागर की रचना का प्रारंभ हुआ। इस कथा का ऐतिहासिक प्रामाणिक मूल्य भले ही विवादास्पद हो, परंतु यह सत्य है कि सूर के पदों में पुष्टिमार्गीय भावना गहराई से समाई हुई है।

3.2 अष्टछाप और पुष्टिमार्गीय काव्य-परंपरा

वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' की स्थापना की—आठ कवियों का यह समूह पुष्टिमार्गीय काव्य-परंपरा का वाहक बना। सूरदास इस समूह के प्रमुख कवि थे। अष्टछाप के कवि वल्लभकुल के मंदिरों में भजन-कीर्तन करते थे और उनके पद नित्य पूजा-लीला में प्रयुक्त होते थे।

इस परंपरा में काव्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं था, अपितु भक्ति-साधना का माध्यम था। सूरदास के पद इसी साधना का फल हैं। उनके पदों में श्रृंगार, वात्सल्य और विनय के भाव पुष्टिमार्गीय रस-सिद्धांत के अनुरूप व्यक्त हुए हैं।

4. सूरसागर में पुष्टिमार्ग के प्रमुख तत्त्व

4.1 भगवत्कृपा और दैन्य-भाव

पुष्टिमार्ग में मानवीय प्रयास की तुलना में ईश्वरीय कृपा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। सूरदास के विनय-पदों में यही भाव प्रमुख है। विनय-पदावली में सूर ने स्वयं को पाप-मग्न और असहाय चित्रित किया है और केवल कृष्ण-कृपा से उद्धार की प्रार्थना की है।

'मैं अपराधी जनम को, नख-सिख भरयो विकार। हरि करुणानिधि देखियो, अपनो बिरद सम्हार।' जैसे पद इसी भाव की अभिव्यक्ति करते हैं। यहाँ जीव की अकर्मण्यता और ईश्वर की सर्वसमर्थता के बीच पुष्टिमार्गीय संबंध स्पष्ट है। यह भाव शंकर के अद्वैत से भिन्न है जहाँ ज्ञान का मार्ग प्रशस्त है।

4.2 लीला-तत्त्व

पुष्टिमार्ग में 'लीला' की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ब्रह्म की सभी क्रियाएँ लीला हैं—वे न तो कर्म-बंधन से उत्पन्न होती हैं, न किसी कामना से। सूरदास ने कृष्ण की समस्त बाल-लीलाओं को इसी दृष्टि से चित्रित किया है।

माखन चोरी, गोपियों के वस्त्र-हरण, कालिया नाग दमन, गोवर्धन उठाना—ये सब लीलाएँ पुष्टिमार्गीय दृष्टि में आनंद-स्वरूप ब्रह्म की अभिव्यक्तियाँ हैं। सूर का एक प्रसिद्ध पद है—'मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो'—यह बाल-लीला का जीवंत चित्र है जहाँ कृष्ण अपनी माँ से शिकायत करते हैं। इस प्रकार के पदों में लीला का आनंद-तत्त्व प्रत्यक्ष होता है।

4.3 वात्सल्य रस और पुष्टि

सूरदास का वात्सल्य-वर्णन हिंदी साहित्य में अतुलनीय है। पुष्टिमार्ग में कृष्ण-भक्ति के पाँच भाव माने गए हैं—शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य। सूर ने विशेष रूप से वात्सल्य और माधुर्य को अपना विषय बनाया।

यशोदा का कृष्ण के प्रति वात्सल्य पुष्टिमार्गीय दृष्टि में आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेम-संबंध का रूपक है। 'जसोदा हरि पालनैं झुलावै' जैसे पद इस भाव की चरम अभिव्यक्ति हैं। यशोदा का कृष्ण को पालने में झुलाना, उनके लिए लोरी गाना—ये सब पुष्टिमार्गीय 'सेवा' के प्रतीक हैं। वल्लभाचार्य के अनुसार भक्त को ईश्वर की सेवा इस प्रकार करनी चाहिए जैसे एक माता अपने शिशु की करती है।

4.4 प्रेमलक्षणा भक्ति

पुष्टिमार्ग में भक्ति के तीन प्रकार माने गए हैं—मर्यादा भक्ति, पुष्टि भक्ति और प्रवाह भक्ति। इनमें 'पुष्टि भक्ति' सर्वोच्च है जो ईश्वर की कृपा से स्वतः प्राप्त होती है। नारद भक्ति सूत्र में वर्णित 'प्रेमलक्षणा भक्ति' ही पुष्टिमार्ग की आदर्श भक्ति है।

सूर की गोपियाँ इसी प्रेमलक्षणा भक्ति की प्रतिनिधि हैं। भ्रमरगीत प्रसंग में जब उद्धव ज्ञान और योग का संदेश लेकर ब्रज आते हैं, तो गोपियाँ उसे अस्वीकार कर देती हैं। उनका तर्क है—'हमारो मन माधव लियो जाय'—अर्थात हमारा मन तो कृष्ण के पास रह गया, हम ज्ञान और योग का क्या करें? यह प्रेमलक्षणा भक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण है।

5. भ्रमरगीत और पुष्टिमार्गीय दर्शन

सूरसागर का 'भ्रमरगीत' प्रसंग पुष्टिमार्गीय दर्शन का काव्यात्मक प्रतिपादन है। जब कृष्ण मथुरा चले जाते हैं और उद्धव ज्ञान-मार्ग का उपदेश लेकर आते हैं, तो गोपियाँ निर्गुण ब्रह्म की उपासना को अस्वीकार कर देती हैं।

'ऊधो मन न भए दस बीस'—यह पद गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम का प्रतीक है। गोपियाँ कहती हैं कि हमारा एक ही मन है और वह तो कृष्ण के पास है, इसलिए योग का अभ्यास कैसे करें? यह पुष्टिमार्गीय दृष्टि की पराकाष्ठा है जहाँ सगुण-सविशेष कृष्ण-प्रेम को निर्गुण ब्रह्म के ज्ञान से श्रेष्ठ माना गया है।

भ्रमरगीत में गोपियों द्वारा उद्धव को दिया गया उत्तर शंकर के अद्वैत और रामानुज के विशिष्टाद्वैत से भिन्न वल्लभ के शुद्धाद्वैत की पुष्टि करता है। यहाँ तर्क और ज्ञान नहीं, अपितु प्रेम और अनुभव को प्रमाण माना गया है। पुष्टिमार्ग में 'प्रेम' ही 'ब्रह्म' है और गोपियाँ इस ब्रह्म-स्वरूप प्रेम की साक्षात् प्रतिनिधि हैं।

6. माधुर्य भक्ति: पुष्टिमार्ग का चरम आदर्श

पुष्टिमार्ग में भक्ति के पाँच भावों में 'माधुर्य' सर्वोच्च है। इसमें भक्त स्वयं को ईश्वर का प्रियतम मानकर उससे प्रेम करता है। सूरदास के श्रृंगार पदों में यही माधुर्य-भाव प्रधान है।

राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाओं का वर्णन सूर के काव्य में अत्यंत भावपूर्ण रूप में हुआ है। यह श्रृंगार रस केवल लौकिक प्रेम का वर्णन नहीं, अपितु आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूपक है। पुष्टिमार्ग में राधा जीवात्मा का प्रतीक है और कृष्ण परब्रह्म के। उनका मिलन मोक्ष की प्राप्ति का प्रतीक है।

'बाँसुरी बाज रही बन माहीं' जैसे पदों में कृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि आत्मा को बुलाने वाली ब्रह्म-शक्ति का प्रतीक है। गोपियाँ इस ध्वनि को सुनकर घर-बार छोड़कर निकल पड़ती हैं—यह आत्मा का ब्रह्म की ओर स्वाभाविक आकर्षण है जो पुष्टिमार्ग की केंद्रीय अवधारणा है।

7. सूरसागर की संरचना और पुष्टिमार्गीय क्रम

सूरसागर की संरचना भागवत पुराण के आधार पर की गई है और यह पुष्टिमार्गीय क्रम का अनुसरण करती है। सूरसागर में कृष्ण की लीलाओं का वर्णन बाल्यावस्था से प्रारंभ होता है—जन्म, नामकरण, माखन-चोरी, गोपियों के साथ खेल, कंस-वध तक।

पुष्टिमार्ग में मंदिर-सेवा के आठ प्रहर के अनुसार भिन्न-भिन्न लीलाओं का गान होता है। सूरदास के पद इसी सेवा-पद्धति से जुड़े हैं। मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, आरती और शयन—ये आठ लीलाएँ मंदिर-सेवा के अंग हैं और सूर के पद इन्हीं के अनुरूप रचे गए हैं।

इस प्रकार सूरसागर केवल काव्य-कृति नहीं, अपितु पुष्टिमार्गीय उपासना-पद्धति का अभिन्न अंग है। सूरदास के पद मंदिर में भगवान को सुनाने के लिए रचे गए थे, इसलिए उनमें भक्ति की तन्मयता और अनुभव की प्रामाणिकता है।

8. पुष्टिमार्ग और अन्य भक्ति-मार्गों से तुलना

8.1 ज्ञानमार्ग से भिन्नता

शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत में जगत माया है और मोक्ष का साधन ज्ञान है। इसके विपरीत पुष्टिमार्ग में जगत ब्रह्म की लीला-अभिव्यक्ति है और मोक्ष का साधन ईश्वर-कृपा है। सूर के भ्रमरगीत में गोपियाँ इसी भेद को स्पष्ट करती हैं। वे योग और ज्ञान को अस्वीकार कर प्रेम को श्रेष्ठ बताती हैं।

8.2 रामानुज के विशिष्टाद्वैत से तुलना

रामानुज के विशिष्टाद्वैत में भक्ति ईश्वर-प्राप्ति का साधन है, परंतु इसमें शास्त्र-विधि का पालन आवश्यक है। पुष्टिमार्ग में शास्त्र-विधि गौण है, ईश्वर-कृपा प्रधान है। सूर के ब्रज के जन शास्त्र-जानकार नहीं हैं, परंतु वे कृष्ण के सबसे प्रिय भक्त हैं—क्योंकि उन पर कृष्ण की विशेष कृपा है।

8.3 निर्गुण भक्ति से भिन्नता

कबीर आदि निर्गुण कवियों की तुलना में सूरदास की भक्ति सगुण है। पुष्टिमार्ग में श्रीकृष्ण की सगुण-सविशेष मूर्ति की उपासना की जाती है।

सूर ने कृष्ण के मानवीय रूप—उनके बचपन, यौवन, प्रेम—को अत्यंत विस्तार से चित्रित किया है। यह सगुण भक्ति का सर्वोत्तम रूप है।

9. साहित्यिक एवं दार्शनिक महत्त्व

सूरदास के साहित्य का पुष्टिमार्गीय अध्ययन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। सर्वप्रथम यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि भक्तिकाल का साहित्य केवल भावनात्मक नहीं, दार्शनिक रूप से भी समृद्ध था। दूसरा यह स्पष्ट करता है कि सूरदास एक व्यवस्थित दार्शनिक परंपरा के प्रतिनिधि कवि थे। तीसरा पुष्टिमार्गीय दृष्टि से सूरसागर का पाठ हमें भ्रमरगीत, वात्सल्य-पदावली और विनय-पदावली के गहरे अर्थ समझने में सहायता करता है। चौथा यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि कृष्ण-भक्ति और सौंदर्य-चिंतन किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़े हैं। आधुनिक साहित्य-आलोचना में प्रायः सूरदास की काव्य-सौंदर्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है और उनके दार्शनिक पक्ष की उपेक्षा होती है। यह शोध यह प्रमाणित करता है कि दोनों पक्ष अन्योन्याश्रित हैं—सूर का काव्य-सौंदर्य उनके पुष्टिमार्गीय दार्शनिक चिंतन से ही उत्पन्न होता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सूरदास का समग्र साहित्य पुष्टिमार्ग के दार्शनिक सिद्धांतों पर आधारित है। पुष्टि (ईश्वर-कृपा), लीला-तत्त्व, प्रेमलक्षणा भक्ति, माधुर्य-भाव, शुद्धाद्वैत और भगवत्-सेवा—ये सब तत्त्व सूर के पदों में भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं। सूरदास केवल भावुक भक्त कवि नहीं थे—वे एक सचेत दार्शनिक परंपरा के वाहक थे। उनके पदों में वल्लभाचार्य का दर्शन जीवंत हो उठा। यदि वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग का सैद्धांतिक प्रतिपादन किया, तो सूरदास ने उसे भावनात्मक और काव्यात्मक जीवन दिया। सूरसागर के बिना पुष्टिमार्ग अधूरा है और पुष्टिमार्ग की समझ के बिना सूरसागर का पूर्ण आस्वाद संभव नहीं। यही सूरदास की महत्ता है—उन्होंने दर्शन को काव्य में और काव्य को साधना में परिणत किया। इस प्रकार सूरदास हिंदी साहित्य में भक्ति और दर्शन के सर्वोत्तम समन्वय के प्रतीक हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. सूरदास। सूरसागर। संपादक नंददुलारे वाजपेयी। प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
2. वल्लभाचार्य। पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद तथा अन्य ग्रंथ। संपादक श्यामदास। वृंदावन।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी। हिंदी साहित्य का इतिहास। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. रामचंद्र शुक्ल। हिंदी साहित्य का इतिहास। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
5. भगवतीलाल जी महाराज। पुष्टिमार्ग दर्शन। नाथद्वारा: श्रीनाथ प्रकाशन।
6. किशोरीलाल गुप्त। सूर का भ्रमरगीत। मुंबई: हिंदी ग्रंथ रत्नाकर।
7. नामदेव। पुष्टिमार्गीय भक्ति-काव्य में दार्शनिक चेतना। शोध-पत्रिका, काशी हिंदू विश्वविद्यालय।
8. रामनरेश त्रिपाठी। हिंदी भक्तिकाव्य और उसके आधार। प्रयाग: प्रयाग पुस्तक भंडार।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.